Date
Page

Dr. Priti Ranjan
Deptt of History
H. D. Jain College
B. A Part - II
paper - 3
Topic - Origin of the Rajputs.

राजपूतों की उत्पत्ति

राजपूत शब्द संस्कृत के राजपुत्र का विकृत रूप है। राजपुत्र शब्द का प्रयोग प्राचीन में राजकुमार के अर्थ में किया गया। पूर्व मध्यकाल में सैनिक वर्गों एवं छोटे-छोटे जमींदारों के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। वस्तुतः आठवीं सदी के उपरान्त राजपूत शब्द शासक वर्ग का पर्याय बन गया। इस वर्ग की उत्पत्ति को लेकर इतिहासकारों में पर्याप्त मतभेद है। कुछ इतिहासकारों ने उन्हें विदेशी मूल का माना है। इस मत का प्रतिपादन सर्वप्रथम कर्नल जेम्स टाड ने किया। उनके अनुसार राजपूत विदेशी सीथियन जाति के संतान थे। टाड के अनुसार दोनों जातियों में कुछ सामाजिक एवं धार्मिक समानता है।

ये हैं रहन-सहन तथा वेशभूषा में समानता मांसाहार का प्रचलन रथों द्वारा युद्ध करना एवं यज्ञों का प्रचलन इसी मत का समर्थन करते हुये विक्रमांक ने कहा कि तत्कालीन समाज में कई विदेशी जातियाँ निवास करती थी। ब्राह्मणों का बौद्ध आदि नास्तिक सम्प्रदायों से द्वेष था। अतः उन्होंने कुछ विदेशी जातियों को शुद्धि संस्कार द्वारा पवित्र करके भारतीय वर्ण व्यवस्था में स्थान प्रदान किया। इन्हीं को राजपूत कहा जाने लगा।

स्मिथ के अनुसार उत्तर-पश्चिम की राजपूत जातियों - प्रतिहार चौहान परमार चालुक्य आदि की उत्पत्ति शकों तथा हूणों से हुयी थी। इसी प्रकार गहड़वाल चन्देल राष्ट्रकूट आदि मध्य तथा दक्षिण क्षेत्र की जातियों देशी आदिम जातियां

की सन्तान थी। [illegible] कुषाण आदि विदेशी जातियों ने हिन्दू धर्म ग्रहण कर लिया। वे कालान्तर में भारतीय समाज में पूर्णतया घुल मिल गयी। उन्होंने यहाँ की संस्कृति को अपना लिया। इन विदेशी शासकों को भारतीय समाज में क्षत्रियत्व का पद प्रदान कर दिया गया। मनुस्मृति में शकों को व्रात्य-क्षत्रिय कहा गया है। इन जाति के वीरता पूर्वक कृत्यों को कवि चारणों ने बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया तथा उनकी तुलना रामायण एवं महाभारत के वीरों से की है।

आर० जी० भण्डारकर ने भी विदेशी उत्पत्ति के मत का समर्थन किया है। उनके अनुसार अग्निकुल के चार राजपूत वंश — प्रतिहार, परमार, चौहान तथा सोलंकी — गुर्जर नामक विदेशी जाति से उत्पन्न हुये थे। चौहान एवं गुहिलोत जैसे कुछ वंश विदेशी जातियों के पुरोहित थे। उनके अनुसार गुर्जर प्रतिहार वंश के लोग निश्चित ही खजर नामक जाति की सन्तान थे जो हूणों के साथ भारत में आयी थी। पुराणों में हैहय नामक राजपूत जाति का उल्लेख शक यवन आदि विदेशी जातियों के साथ किया गया है। इससे भी राजपूतों का विदेशी होना सिद्ध होता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि इन विदेशी जातियों को शुद्धि द्वारा भारतीय समाज में सम्मिलित करने के उद्देश्य से ही पृथ्वीराज रासो में अग्निकुण्ड द्वारा राजपूतों की उत्पत्ति बतायी गयी है। इस कथा के अनुसार जब परशुराम ने क्षत्रियों का विनाश कर दिया तो शासकों का अभाव हो गया। म्लेच्छों एवं राक्षसों को

अत्याचार कर रहे थे। पृथ्वी त्रस्त हो उठी। अतः वशिष्ठ ने आबू पर्वत पर एक यज्ञ किया जहाँ यज्ञ की अग्निकुण्ड में चार राजपूत कुलों का उद्भव हुआ। इस कथा से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि भारतीय वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत स्थान प्रदान कर दिया गया था।

राजपूतों की उत्पत्ति के उपरोक्त विदेशी सिद्धान्त का विरोध गौरी शंकर हीराचन्द ओझा तथा सी० वी० वैद्य जैसे कुछ भारतीय विद्वानों ने किया है। इनकी सम्मति में राजपूत विशुद्ध भारतीय क्षत्रियों की ही सन्तान थे। जिनमें विदेशी रक्त का मिश्रण बिलकुल ही नहीं था। इनको अनुसार टाड ने राजपूत तथा सीथियन जातियों में भिन्न समान प्रथाओं का संकेत किया है वह कल्पना पर आधारित है। ये सभी प्रथायें भारत की प्राचीन क्षत्रिय जाति में देखी जा सकती है। टॉड के निष्कर्ष की पुष्टि किसी भी ऐतिहासिक साक्ष्य से नहीं होती है। यह विचार कोरी कल्पना की उपज है। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि खजर नामक किसी जाति ने कभी भी भारत के ऊपर आक्रमण किया है।

भारतीय अथवा विदेशी किसी भी साक्ष्य में इस जाति का उल्लेख नहीं मिलता है। पृथ्वीराज रासो में वर्णित अग्निकुल की कथा ऐतिहासिक नहीं लगती। इस कथा का उल्लेख रासो की प्राचीन पाण्डुलिपियों में नहीं मिलता है। इस प्रकार विदेशी उत्पत्ति का मत कल्पना पर आधारित है ~~तथ्यों पर~~ ~~कथा~~ राजपूत शब्द वस्तुतः राजपुत्र का ही अपभ्रंश है, जिसका प्रयोग भारतीय ग्रंथों में क्षत्रिय जाति के लिए हुआ है।

पाणिनी के अनुसार राजपुत्र शब्द का प्रयोग राजन्य अथवा शासक के रूप में हुआ। महाभारत में विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र चलाने वाले को राजपूत कहा गया है। आठवीं सदी के लेखक भवभूति ने कौशल्या को राजपुत्री कहा है। अतः मध्यकालीन साहित्य में भी राजपुत्र शब्द का प्रयोग क्षत्रिय जाति के लिए ही किया गया है। कल्हण की राजतरंगिणी में शाही परिवारों के उत्तराधिकारी को राजपुत्र की संज्ञा प्रदान की गयी है। ऐसा प्रतीत होता है कि तुर्कों द्वारा पराजित हो जाने के बाद राजपुत्रों की राजनैतिक प्रतिष्ठा समाप्त हो गयी तथा तुर्कों ने अपमानस्वरूप उन्हें राजपुत्र राजपूत कहना शुरू कर दिया। कालान्तर में यही नाम लोकप्रचलित हो गया। अतः इन विद्वानों के अनुसार राजपूतों को वैदिक क्षत्रियों की सन्तान मानना चाहिए। ओझा ने राजपूतों को विशुद्ध क्षत्रिय सिद्ध करने के लिए मनु-स्मृति से उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसमें एक स्थान पर विवृत है कि "पौण्ड्रक, चोल, द्रविड़ यवन शक एवं पह्लव मूलतः क्षत्रिय थे किन्तु वैदिक क्रियाओं के त्याग तथा ब्राह्मणों से विमुख हो जाने के कारण उनका क्षत्रियत्व समाप्त हो गया। इससे स्पष्ट हो जाता है कि शक-यवन आदि जिन्हें राजपूतों का जनक बताया जाता है, क्षत्रिय ही थे वस्तुतः प्राचीन क्षत्रिय वर्ग के शासक तथा योद्धा वर्ग के लोग ही बारहवीं सदी में राजपूत कहे गये। यदि वे विदेशी होते तो भारतीय संस्कृति एवं भारत देश के प्रति उनमें इतनी अधिक भक्ति कदापि नहीं हो सकती थी।

उपर्युक्त दोनों मत अतिवादी हैं। वस्तुस्थिति तो यह है कि भारतीय वर्ण व्यवस्था में सदा ही विदेशी जातियों के लिए स्थान दिया गया। यहाँ कोई भी जाति ऐसी नहीं थी जिसमें विदेशी रक्त का मिश्रण न हो।

स्वयं आर्य भी यहाँ बाहर से आये थे। कई विदेशियों ने भारतीय वंशों में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये। सातवाहन तथा इक्ष्वाकु शासकों ने पश्चिमी क्षत्रपों की कन्याओं के साथ विवाह किये, जिसके अभिलेखीय प्रमाण मिलते हैं। इससे प्रतीत होता है कि प्राचीन वर्ण व्यवस्था पर्याप्त लचीली थी। वैदिक काल में क्षत्रियों का कोई विशिष्ट वर्ग नहीं था अपितु उन लोगों को ही क्षत्रिय कहा जाता जो वीर और साहसी होते थे। स्वयं क्षत्रिय शब्द का अर्थ है क्षत अर्थात हानि से रक्षा करने वाला। अतः यह कहा जा सकता है कि राजपूत क्षत्रियों के वंशज थे, तथापि उनमें विदेशी रक्त का मिश्रण अवश्य था। वैदिक क्षत्रियों में विदेशी जाति के वीरों के मिश्रण से जिस नवीन जाति का आविर्भाव हुआ उसे ही राजपूत कहा जाता। राजपूत न तो पूर्णरूपेण विदेशी थे और न पूर्णरूपेण भारतीय ही।

आधुनिक सामाजिक आर्थिक इतिहासकारों ने राजपूत वंश की उन्नति के लिए कुछ सामाजिक प्रक्रियाओं को उत्तरदायी माना है। यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि राजस्थान तथा गुजरात में प्रारम्भिक राजपूत वंशों का उदय उस समय हुआ जबकि गुप्त साम्राज्य के पतनोन्मुख प्रान्त विदेशी आक्रमणों के कारण अर्थव्यवस्था पतनोन्मुख हो रही थी।